मधुबन ओम् शान्ति अंक 280 नवम्बर 2015

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(15-10-15)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा जागती ज्योत बन सर्व की ज्योति जगाने वाले, जग को रोशन करने वाले बाबा के नयनों के नूर, विश्व कल्याण की बेहद सेवा के निमित्त बनी हुई टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश में बाबा का नाम रोशन करने वाले ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ आज भारत के मुख्य त्योहार नवरात्रि, विजयदशमी और दीपावली की सबको बहुत-बहुत दिल से हार्दिक बधाईयां स्वीकार हों।

संगमयुग के यह यादगार त्योहार भी सभी में कितना उमंग-उत्साह भर देते हैं, चारों ओर खुशी की लहर छा जाती है। मीठे बाबा ने तो हम सबको सदाकाल के लिए खुशनसीब, खुशकिस्मत बनाया है। हम सब कितने पदमापदम भाग्यशाली बाबा के बच्चे हैं, जिनके हर श्वांस संकल्प में बाबा ही बसता है, बाबा की याद का एक एक सेकण्ड, एक एक संकल्प पदमों की कमाई करा रहा है। यह सम्मुख में प्रभु मिलन का भाग्य भी कोटों में कोई, कोई में भी कोई को ही प्राप्त होता है। देखो, फिर से बाबा के मंगल मिलन की वेला आ गई। देश विदेश के हजारों भाई बहिनें इस पहले ग्रुप में अव्यक्त मिलन मनाने, सर्व शक्तियों से अपनी झोली भरने पहुंच गये हैं। ज्ञान सरोवर, पाण्डव भवन में डबल विदेशी भाई बहिनों की रिमझिम है तो शान्तिवन में भारतवासी भाई बहिनों की। कल मीठे अव्यक्त बापदादा ने सबको बहुत स्नेह भरी नज़रों से निहाल करते वाह बच्चे वाह के गीत गाते, कितना सभी में नया उमंग, नया उत्साह भर दिया। यह अव्यक्त पालना भी कितनी शक्तिशाली है जो एक सेकण्ड की दृष्टि भी चारों ओर खुशी की लहर फैला देती है।

अब तो मीठे अव्यक्त बापदादा का यही इशारा है कि बच्चे सेकण्ड में सब संकल्पों को समेटकर एक ही शुद्ध संकल्प में एकाग्र हो जाओ। संकल्पों की भी हलचल समाप्त हो जाए। अब यज्ञ की सारी कारोबार भी शुद्ध श्रेष्ठ संकल्पों की शक्ति से ही चल रही है, चलती रहेगी। आवाज में आने की आवश्यकता ही नहीं है। जैसे अव्यक्त बापदादा की रिवाइज मुरली में था कि सूक्ष्मवतन की सारी कारोबार शुद्ध संकल्पों की शक्ति से, वाइसलेस स्थिति के आधार पर चलती है। वहाँ का अनुभव करने के लिए सर्व सम्बन्धों के सार वाली महीन याद चाहिए। तो बोलो, हमारे मीठे मीठे भाई बहिनें, अपनी लवलीन स्थिति द्वारा सर्व सम्बन्धों के प्यार में समाते हुए अव्यक्त वतन की सैर करते रहते हो ना! इसके लिए सिर्फ ध्यान रखना है कि इधर उधर की व्यर्थ बातों में बुद्धि को भटकाने की आदत न हो। बुद्धि अगर इधर उधर भटकती है तो माया अच्छा सोचने नहीं देती, बुद्धि को शुद्ध बनने नहीं देती, इसलिए कर्म करते मन-बुद्धि को बहुत सम्भालना है। बहुत अच्छे ऊंची क्वालिटी वाले संकल्प ही करने हैं। हम भगवान के बच्चे हैं जो चाहे सो कर सकते हैं परन्तु हम सिर्फ उस करन-करारवनहार के हाथ में आ जायें। अपनी मनमत न चलायें, परमत के प्रभाव में न रहें, श्रीमत को सिरमाथे पर रखें। जैसा हमारा बाबा है, वैसा ही हम बच्चों को करना है, बस। जैसे बाबा बोलता है, जैसे बाबा का चेहरा है, जैसे बाबा के नयनों में (दृष्टि में) सबके लिए प्यार है। ऐसे हमें भी फालो फादर करके समान बनना है। बोलो, ऐसा ही लक्ष्य रख तीव्र पुरुषार्थ की रेस चलती रहती है ना। बाकी तो आप सब अभी मधुबन घर में आने की तैयारियां कर रहे होंगे। साइंस के साधन भी दूर बैठे सम्मुख का अनुभव करा देते हैं। अच्छा -

सभी को बहुत-बहुत याद....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

तपस्या वर्ष (नवम्बर 2015) के लिए विशेष होम वर्क

A) बीजरूप, लाइट माइट सम्पन्न पावरफुल स्थिति बनाओ

1) बीजरूप स्टेज सबसे पावरफुल स्टेज है, यह स्टेज लाइट हाउस, माइट हाउस का कार्य करती है। जैसे बीज द्वारा स्वत: ही सारे वृक्ष को पानी मिल जाता है ऐसे जब बीजरूप स्टेज पर स्थित रहते हो तो आटोमेटिकली विश्व को लाइट का पानी मिलता है।

2) जैसे लाइट हाउस एक स्थान पर होते हुए चारों ओर अपनी लाइट फैलाता है, ऐसे लाइट हाउस बन, विश्व कल्याणकारी बन विश्व तक अपनी लाइट फैलाने के लिए पावरफुल स्टेज चाहिए। जैसे स्थूल लाइट का बल्ब तेज पावर वाला होगा तो चारों ओर लाइट फैलेगी। जीरो पावर हद तक रहेगी। तो अब लाइट हाउस बनो न कि बल्ब।

3) अभी तक की रिज़ल्ट में मास्टर सूर्य के समान नॉलेज की लाईट देने के कर्त्तव्य में सफल हुए हो लेकिन अब किरणों की माइट से हरेक आत्मा के संस्कार रूपी कीटाणु को नाश करने का कर्त्तव्य करना है। अभ्यास ऐसा हो जो चलते फिरते आपके मस्तिष्क से लाईट का गोला नज़र आये और चलन से, वाणी से नॉलेज रूपी माइट का गोला नज़र आये अर्थात् बीज नज़र आये। मास्टर बीजरूप, लाईट और माइट का गोला बनो तब साक्षात् वा साक्षात्कार मूर्त्त बन सकेंगे।

4) कोई भी हिसाब-चाहे इस जन्म का, चाहे पिछले जन्म का, लग्न की अग्नि-स्वरूप स्थिति के बिना भस्म नहीं होता। सदा अग्नि-स्वरूप स्थिति अर्थात् शक्तिशाली याद की स्थिति, बीजरूप, लाइट हाउस, माइट हाउस स्थिति इस पर अब विशेष अटेन्शन दो तब रहे हुए सब हिसाब-किताब पूरे होंगे।

5) जैसे वृक्ष का रचयिता बीज, जब वृक्ष की अन्तिम स्टेज आती है तो वह फिर से ऊपर आ जाता है। ऐसे बेहद के मास्टर रचयिता सदा अपने को इस कल्प वृक्ष के ऊपर खड़ा हुआ अनुभव करो, बाप के साथ-साथ वृक्ष के ऊपर मास्टर बीजरूप बन शक्तियों की, गुणों की, शुभ भावना, शुभ कामना की, स्नेह की, सहयोग की किरणें फैलाओ। जैसे सूर्य ऊंचा रहता है तो सारे विश्व में स्वत: ही किरणें फैलती हैं। ऐसे मास्टर रचयिता वा मास्टर बीजरूप बन सारे वृक्ष को किरणें वा पानी दे सकते हो।

6) जब विशेष याद में बैठते हो तो अपने कोई न कोई श्रेष्ठ स्वमान की सीट पर बैठो। कभी 'मास्टर बीजरूप' की स्थिति के आसन पर, कभी 'अव्यक्त फरिश्ते' की सीट पर कभी 'विश्व-कल्याणकारी स्थिति' की सीट पर सेट हो जाओ, ऐसे हर रोज़ भिन्न-भिन्न स्थिति के आसन पर व सीट पर सेट होकर बैठो तो शक्तिशाली याद का अनुभव करेंगे।

7) जब आप अपनी बीजरूप स्थिति में स्थिति रहेंगे तो अनेक आत्माओं में समय की पहचान और बाप की पहचान का बीज पड़ेगा। अगर बीजरूप स्थिति में स्थित न रहे सिर्फ विस्तार में चले गये तो ज्यादा विस्तार से वैल्यु नहीं रहेगी, व्यर्थ हो जायेगा इसलिए बीजरूप स्थिति में, बीजरूप की याद में स्थित हो फिर बीज डालो। फिर देखना उस बीज का फल कितना अच्छा और सहज निकलता है।

8) विशेष अमृतवेले पावरफुल स्थिति की सेटिंग करो। पॉवरफुल स्टेज अर्थात् बाप समान बीजरूप स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास करो। जैसा श्रेष्ठ समय है, वैसी श्रेष्ठ स्थिति होनी चाहिए। साधारण स्थिति में तो कर्म करते भी रह सकते हो, लेकिन यह विशेष वरदान का समय है। इस समय को यथार्थ रीति यूज़ करो तो सारे दिन की याद की स्थिति पर उसका प्रभाव रहेगा।

9) बीजरूप को सदा साथ रखो तो माया का बीज ऐसा भस्म हो जायेगा जो फिर कभी भी उस बीज से अंश भी नहीं निकल सकेगा। वैसे भी आग में जले हुए बीज से कभी फल नहीं निकलता इसलिए बीज को छोड़ सिर्फ शाखाओं को काटने की मेहनत नहीं करो। बीजरूप द्वारा विकारों के बीज को खत्म कर दो तो बार-बार मेहनत करने से स्वत: ही छूट जायेंगे।

10) एकान्तवासी अर्थात् कोई भी एक शक्तिशाली स्थिति में स्थित होना। चाहे बीजरूप स्थिति में स्थित हो जाओ, चाहे लाइट-हाउस, माइट-हाउस स्थिति में स्थित हो जाओ अर्थात् विश्व को लाइट-माइट देने वाले - इस अनुभूति में स्थित हो जाओ। तो यह एक मिनट की स्थिति भी स्वयं को और औरों को भी बहुत लाभ दे सकती है।

11) बीजरूप स्थिति का अनुभव करने के लिए एक तो मन और बुद्धि दोनों को पावरफुल ब्रेक चाहिए और मोड़ने की भी

शक्ति चाहिए। इसी को ही याद की शक्ति वा अव्यक्ति शक्ति कहा जाता है। अगर ब्रेक नहीं दे सके तो भी ठीक नहीं। अगर टर्न नहीं कर सके तो भी ठीक नहीं। तो ब्रेक देने और मोड़ने की शक्ति से बुद्धि की शक्ति व्यर्थ नहीं जायेगी। एनर्जी जितना जमा होगी उतना ही परखने की, निर्णय करने की शक्ति बढ़ेगी।

12) बीजरूप स्थिति में रहने का अभ्यास तो करो लेकिन कभी लाइट-हाउस के रूप में, कभी माइट-हाऊस के रूप में, कभी वृक्ष के ऊपर बीज के रूप में, कभी सृष्टि-चक्र के ऊपर टॉप पर खड़े होकर सभी को शक्ति दो। कभी मस्तकमणि बन, कभी तख्तनशीन बन... भिन्न-भिन्न स्वरूपों का अनुभव करो। वैराइटी करो तो रमणीकता आयेगी, बोर नहीं होंगे।

13) बीजरूप स्थिति या शक्तिशाली याद की स्थिति यदि कम रहती है तो इसका कारण अभी तक लीकेज है, बुद्धि की शक्ति व्यर्थ के तरफ बंट जाती है। कभी व्यर्थ संकल्प चलेंगे, कभी साधारण संकल्प चलेंगे। जो काम कर रहे हैं उसी के संकल्प चलना इसको कहते हैं साधारण संकल्प। याद की शक्ति या मनन शक्ति जो होनी चाहिए वह नहीं होती इसलिए पावरफुल याद का अनुभव नहीं होता इसलिए सदा समर्थ संकल्पों में, समर्थ स्थिति में रहो तब शक्तिशाली बीजरूप स्थिति का अनुभव कर सकेंगे।

14) मैजॉरिटी भक्तों की इच्छा सिर्फ एक सेकेण्ड के लिये भी लाइट देखने की है, इस इच्छा को पूर्ण करने का साधन आप बच्चों के नयन हैं। इन नयनों द्वारा बाप के ज्योतिस्वरुप का साक्षात्कार हो। यह नयन, नयन नहीं दिखाई दें लाइट का गोला दिखाई दे।

15) अभी संगठित रूप में लाइट-हाउस, माइट-हाउस बन शक्तिशाली वायब्रेशन्स फैलाने की सेवा करो। अभी अपनी वृत्ति को, वायब्रेशन, वायुमण्डल पावरफुल बनाओ। चारों ओर का वायुमण्डल सम्पूर्ण निर्विघ्न, रहमदिल, शुभ भावना, शुभ कामना वाला बने तब यह लाइट-माइट प्रत्यक्षता के निमित्त बनेंगी।

B) विदेही स्थिति का अनुभव करो

1) जैसे बाप को सर्व स्वरुपों से वा सर्व सम्बन्धों से जानना आवश्यक है, ऐसे ही बाप द्वारा स्वयं को भी जानना आवश्यक है। जानना अर्थात् मानना। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, ऐसे मानकर चलेंगे तो देह में विदेही, व्यक्त में होते अव्यक्त, चलते-फिरते फरिश्ता वा कर्म करते हुए कर्मातीत स्थिति बन जायेगी।

2) जैसे विदेही बापदादा को देह का आधार लेना पड़ता है, बच्चों को विदेही बनाने के लिए। ऐसे आप सभी जीवन में रहते, देह में रहते, विदेही आत्मा-स्थिति में स्थित हो इस देह द्वारा करावनहार बन करके कर्म कराओ। यह देह करनहार है, आप देही करावनहार हो, इसी स्थिति को ''विदेही स्थिति'' कहते हैं। इसी को ही फॉलो फादर कहा जाता है। बाप को फॉलो करने की स्थिति है सदा अशरीरी भव, विदेही भव, निराकारी भव!

3) विदेही बनने में ''हे अर्जुन बनो''। अर्जुन की विशेषता - सदा बिन्दी में स्मृति स्वरुप बन विजयी बना। ऐसे नष्टोमोहा स्मृति स्वरुप बनने वाले अर्जुन। सदा गीता ज्ञान सुनने और मनन करने वाले अर्जुन। ऐसा विदेही, जीते जी सब मरे पड़े हैं, ऐसे बेहद की वैराग्य वृत्ति वाले अर्जुन बनो।

4) बाप के समीप और समान बनने के लिए देह में रहते विदेही बनने का अभ्यास करो। जैसे कर्मातीत बनने का एग्जैम्पल साकार में ब्रह्मा बाप को देखा, ऐसे फॉलो फादर करो। जब तक यह देह है, कर्मेन्द्रियों के साथ इस कर्मक्षेत्र पर पार्ट बजा रहे हो, तब तक कर्म करते कर्मेन्द्रियों का आधार लो और न्यारे बन जाओ।

5) अपने को शरीर के बंधन से न्यारा बनाने के लिए अवतार समझो। अवतार हूँ, इस स्मृति में रह शरीर का आधार ले कर्म करो। कर्म के बंधन में नहीं बंधो। **देह में होते भी विदेही अवस्था का अनुभव करो।**

6) जो भी परिस्थितियां आ रही हैं और आने वाली हैं, उसमें विदेही स्थिति का अभ्यास बहुत चाहिए इसलिए और सभी बातों को छोड़ यह तो नहीं होगा, यह तो नहीं होगा... क्या होगा.., इस क्वेश्चन को छोड़ दो, अभी विदेही स्थिति का अभ्यास बढ़ाओ। विदेही बच्चों को कोई भी परिस्थिति वा कोई भी हलचल प्रभाव नहीं डाल सकती।

7) अन्त समय में प्रकृति के पांचों ही तत्व अच्छी तरह से हिलाने की कोशिश करेंगे, परन्तु विदेही अवस्था की अभ्यासी आत्मा बिल्कुल ऐसा अचल-अडोल पास विद आनर होगी जो सब बातें पास हो जायेंगी लेकिन वह ब्रह्मा बाप के समान पास विद आनर का सबूत देगी।

8) कोई भी सेवा के प्लैन्स बनाते हो, भले बनाओ, भले सोचो, लेकिन क्या होगा!... उस आश्चर्यवत् होकर नहीं। विदेही, साक्षी बन सोचो। सोचा, प्लैन बनाया और सेकण्ड में प्लेन स्थिति बनाते चलो। अभी आवश्यकता स्थिति की है। यह विदेही स्थिति परिस्थिति को बहुत सहज पार कर लेगी। जैसे बादल आये, चले गये। विदेही, अचल-अडोल हो खेल देख रहे हैं।

9) जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त बन विदेही स्थिति द्वारा कर्मातीत बने, तो अव्यक्त ब्रह्मा की विशेष पालना के पात्र हो इसलिए अव्यक्त पालना का रेसपान्ड विदेही बनकर दो। सेवा और स्थिति का बैलेन्स रखो।

10) सारे दिन में बीच-बीच में एक सेकण्ड भी मिले, तो बार-बार यह विदेही बनने का अभ्यास करते रहो। दो चार सेकण्ड भी निकालो इससे बहुत मदद मिलेगी। नहीं तो सारा दिन बुद्धि चलती रहती है, तो विदेही बनने में टाइम लग जाता है और अभ्यास होगा तो जब चाहे उसी समय विदेही हो जायेंगे क्योंकि अन्त में सब अचानक होना है। तो अचानक के पेपर में यह विदेही पन का अभ्यास बहुत आवश्यक है।

11) जितना जो बिजी है, उतना ही उसको बीच-बीच में यह अभ्यास करना जरूरी है, फिर सेवा में जो कभी-कभी थकावट होती है, कभी कुछ न कुछ आपस में हलचल हो जाती है, वह नहीं होगा। एक सेकण्ड में न्यारे होने का अभ्यास होगा तो कोई भी बात हुई एक सेकण्ड में अपने अभ्यास से इन बातों से दूर हो जायेंगे। सोचा और हुआ। युद्ध नहीं करनी पड़ेगी।

12) अगर सेकण्ड में विदेही बनने का अभ्यास नहीं होगा तो लास्ट घड़ी भी युद्ध में ही जायेगी और जिस बात में कमजोर होंगे, चाहे स्वभाव में, चाहे सम्बन्ध में आने में, चाहे संकल्प शक्ति में, वृत्ति में, वायुमण्डल के प्रभाव में, जिस बात में कमजोर होंगे, उसी रूप में जानबूझकर भी माया लास्ट पेपर लेगी इसीलिए विदेही बनने का अभ्यास बहुत जरूरी है।

13) विदेही माना देह से न्यारा। स्वभाव, संस्कार, कमजोरियां सब देह के साथ हैं और देह से न्यारा हो गया तो सबसे न्यारा हो गया, इसलिए यह ड्रिल बहुत सहयोग देगी, इसमें कन्ट्रोलिंग पावर चाहिए।

14) चारों ओर हलचल है, व्यक्तियों की, प्रकृति की हलचल बढ़नी ही है, ऐसे समय पर सेफ्टी का साधन है सेकण्ड में अपने को विदेही, अशरीरी वा आत्म-अभिमानी बना लेना। तो बीच-बीच में ट्रायल करो एक सेकण्ड में मन-बुद्धि को जहाँ चाहे वहाँ स्थित कर सकते हैं! इसको ही साधना कहा जाता है।

15) विदेही बनने की विधि है - बिन्दी बनना। अशरीरी बनते हो, कर्मातीत बनते हो, सबकी विधि बिन्दी है इसलिए बापदादा कहते हैं अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाते, रूहरिहान करते जब कार्य में आते हो तो पहले तीन बिन्दियों का तिलक मस्तक पर लगाओ और चेक करो - किसी भी कारण से यह स्मृति का तिलक मिटे नहीं। अविनाशी, अमिट तिलक रहे।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 27-4-13 *मधुबन*

"निश्चयबुद्धि, सच्ची भावना और अटल विश्वास की लाइफ और को प्रेरणा देती है"

(दादी जानकी)

मुरली पूरी होते ही जो वरदान और स्लोगन होता है, वह बहुत काम का होता है। धारणा के लिए सार भी अच्छा होता है। तो बाबा हम बच्चों को रोज़ाना ताजा खाना खिलाता है। ऐसे नहीं जो कल खिलाया पेट भर गया इसलिए आज जरुरत नहीं है। इस शरीर को तो रोज़ाना ताजा भोजन चाहिए, कल वाला खायेंगे तो...। रोज़ ताजा भोजन करेंगे तो फ्रेश रहेंगे। सरेण्डर मरे के बराबर हैं क्योंकि यह तन मन धन सम्बन्ध मेरा नहीं। तो हर एक अपने आपको चेक करे कि सम्बन्ध-सम्पर्क में आते भी यह ऐसे क्यों करता, क्या करता? क्वेश्चन तो नहीं! जिस घड़ी क्वेश्चन उठाया माना प्रश्नों की क्यू लग जायेगी। कभी कोई कहेगा कोई प्रश्न नहीं है, मैं ठीक हूँ, दिल से कहेगा तो चेहरा बतायेगा परन्तु कोई क्यू लगायेगा। क्वेश्चन माना क्यू में खड़ा होना, ऑन्सर मिलेगा तो भी नहीं सुनेगा। सुने तो आगे बढ़े ना। पंख टूटे पड़े हैं, भले बाबा कहता है चल उड़ जा रे पंछी... पर पंछी तभी उड़ेगा जब देश बेगाना है। मेरा नहीं है, पराया है। संगम का यह समय बताता है कि यह देश पुराना है, पराया है। बाप नया बनाने आता है। बाप कोई पुराने को रिपेयर करने नहीं आता है, नया बनाने आता है।

तो देश देखो, सम्बन्ध देखो, यह भी हमारा नहीं, यह भी हमारी नहीं, कुछ हमारा नहीं। नाम मात्र हम एक साथ बैठे हैं लेकिन अन्दर है, उमंग-उत्साह के पंख से बड़ा अच्छा लगता है। बाबा की दृष्टि से उस पार चले जाते हैं, तो बाबा कभी कहता है मेरे को याद करो, कभी कहता है मेरे घर को याद करो। बैठा यहाँ सामने है, पर जहाँ से जिस घर से आया हुआ

हूँ, वो तेरा भी घर है। तो याद में हर एक का भिन्न-भिन्न प्रकार का अनुभव होगा। कभी अपने को आत्मा समझने से बाबा को याद करना सहज है। कभी आत्मा समझने में टाइम लगता है, पर बाबा की याद से आत्मा समझ जाते हैं। कभी यह बहुत अच्छा है, आत्मा हूँ... बाबा ने खैंच लिया, कभी बाबा की खैंच से ऑटोमेटिक आत्म-अभिमानी बन जाते हैं। मतलब हमको बाबा को याद करना है, कैसे भी करके, याद करना नहीं पर याद में रहना है। ऐसी याद में रहना है जिसमें आत्मा प्युअर बनती जाये, कोई घड़ी ऐसी नहीं जो याद करना पड़े।

बाबा की सब बातें अच्छी लगती हैं, पर कोई कोई बातें बहुत अच्छी लगती हैं। निश्चय बुद्धि से विजय हुई पड़ी है, यह अनुभव है। निश्चय बुद्धि से कभी क्वेश्चन नहीं उठने से जो भावना से हम कार्य करते हैं, वह सफल होता है। सच्ची भावना, अटल विश्वास की लाइफ औरों को प्रेरणा देने वाली होती है, इसमें कमाल है निश्चय की या भावना की या पहले से ही अन्दर से ड्रामा की नॉलेज में बहुत विश्वास है कि हुआ पड़ा है पर मुझे अभी करना है, तो अच्छा हो जाता है। ऐसे नहीं जो ड्रामा में होगा, यह भी नहीं कहो, बोलने की बड़ी शुद्ध भाषा हो, जो करनी कथनी एक हो। करनी एक कथनी दूसरी, यह जँचता नहीं है। पहले करना है, जो करता है उसको मुख से कहने की जरुरत नहीं है। करना है, समय ऐसा है, समय का बहुत कदर है, पढ़ाने वाला बाबा हमें पढ़ा रहा है, हम पढ़ रहे हैं। मुख्य बात है शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा के तन में बैठके पढ़ाता है, शिवबाबा को यह नशा नहीं है, विश्व की बादशाही मुझे मिलने वाली है। वो देने वाला है, ब्रह्मा बाबा लेने वाला है।

सारे मनुष्य सृष्टि में कुदरत के नियम अनुसार मनुष्य आत्मा को बाबा देवता बनाता है। वहाँ कोई कमी नहीं होगी। हम यहाँ मेहनत करके देवता तो क्या फरिश्ता बन रहे हैं। धरती पर पाँव न हों, उड़ती कला हो इसलिए सब जहाँ तहाँ प्लेन में घूमते रहते हैं। पता ही नहीं चलता है, प्लेन में बैठे हैं और प्लेन चल या उड़ रहा है, बहुत शान्त... तो प्रकृति भी दिखाती है, मैं कैसे समय पर साथ देती हूँ। हाँ, कायदा है सीट बेल्ट बांधने की। एक बारी स्पीड़ पकड़ ली तो बेफिक्र हो सो जाओ। फिर बताते हैं कितना टाइम लगेगा उतरने में, फिर भी अगर कोई कहे नहीं, यहीं कम्फरटेबल है, आराम से बैठे हैं, तो आराम से बैठ जायेंगे क्या? तो यहाँ कभी कभी कम्फरटेबल मिलता है, तो उस ज़ोन में रहने वाले नहीं बनो, यहाँ सब बहुत अच्छा है, इसलिए मैं यहीं रहूँगी, फाइनल कर दिया। लेकिन यह नहीं चलेगा, किसकी नेचर है, जब तक वह चीज़ मिलेगी नहीं तब तक नींद नहीं आयेगी। वास्तव में सच्चाई और प्रेम से कहीं कोई दिक्कत नहीं आती है। जो बाबा ने डिसीप्लेन बनाके दिया है उस पर एक्यूरेट रहें। मेरे को यह नहीं चलता है, मेरे को ऐसे करना है.. तो बाबा बंधायमान नहीं है उसको सम्भालने के लिए। जो बाबा ने डिसीप्लेन बनाके दिया है, वह अच्छे लगते हैं उसमें कम्फरटेबल हैं। नियम पर चलना बहुत सुखदाई है। नियम, मर्यादा, सभ्यता... बातचीत करने की सभ्यता ऐसी हो, मान मांगने से नहीं मिलता है, माननीय बनने से मान ऑटोमेटिक मिलता है।

बाबा चला रहा है पर जो बाबा की श्रीमत पर चले हैं, उसकी भी अन्दर प्यार भरी सकाश है। ताकि सबको पता चले हमारे फाउण्डेशन में स्थापना के कार्य में असली साथी कौन हैं? बाबा अकेला नहीं है, शिवबाबा बीजरूप है। ब्रह्माबाबा को बीजरूप नहीं कहेंगे।

जैसे दादी का, बाबा का, मम्मा का फोटो सभी ने लगाया है, ऐसे सभी पूर्वजों का भी फोटो हो... बाबा मम्मा ने इन्हों को ऐसा कैसे बनाया? बाबा ने जो सेवा के बन्धन में बांधा है तो सूक्ष्म मन वाणी कर्म से स्नेह भरे वायब्रेशन से अच्छे अनुभव होते हैं। निश्चय की भी शक्ति है, गैरंटी है दुनिया में कुछ भी हो जायेगा हमको कुछ नहीं होगा। और कुछ कहने की बात ही नहीं है, विनाश कब होगा? यह पूछने की क्या बात है? तुम तैयार तो हो जाओ। विनाश के पहले नई दुनिया की स्थापना हो जाये, तुम्हारी फरिश्तों जैसी स्थिति बन जाये। बहुतकाल से निर्वैर, निर्भय स्थिति हो तो विनाश के समय मिरुआ मौत मलूकों के लिए शिकार... ऐसी स्थिति अभी-अभी बनानी है। विनाश के पहले हम तैयार बैठे हैं, ऐसे ऊपर रहते हैं ना, तो कोई भी बात हमारे तक पहुँचेगी नहीं। पाँच तत्वों की हम रक्षा कर रहे हैं, उसको सतोप्रधान बना रहे हैं, तो प्रकृति का कोई भी प्रकोप हमारे नज़दीक भी नहीं आयेगा। तो हमारे लिए सब अच्छा होगा। मेरी सरेण्डर लाइफ है, तो अशरीरी, देह यहाँ, मैं वहाँ...। मैं आत्मा बाप के घर से आयी हूँ, अभी ब्रह्मा मुख वंशावली हूँ, यह अभ्यास करो।

भाई बहनों के प्रश्न और दादी जानकी जी के उत्तर

हर मिनट और हर सेकेण्ड, हर घड़ी फैमिली फीलिंग बहुत अच्छी हो। भले ज्ञान योग में मैं अकेली आत्मा हूँ परन्तु अकेली नहीं हूँ, बाबा के साथ हूँ। बाबा भी साथ तभी देता है जब मैं अकेली होती हूँ। बाबा बहुत होशियार है।

प्रश्नः- दादी, चारों सबजेक्ट में से आपका फेवरेट सबजेक्ट कौन-सा है? उत्तरः- चारों ही।

प्रश्नः- दादी, आपकी खुद की विशेषता क्या है? उत्तरः- जो बाबा ने दिया है वह सबको मिले।

प्रश्नः- दादी, आप बाबा को एक ऐसा कौन-सा टाइटल देंगे जिसमें बाबा की सब विशेषतायें आ जायें? उत्तरः- जानी-जाननहार।

प्रश्नः- दादी, आपका फेवरेट गुण कौन-सा है? उत्तरः- दे दान छूटे ग्रहण।

प्रश्नः- दादी, ब्रह्माबाबा कहने से कौन-सा शब्द आपके मन में आता है? उत्तरः- मेरा बाबा।

प्रश्नः- दादी, लण्डन की विशेषता क्या है? उत्तरः- कॉपी करने की।

प्रश्नः- दादी, सारे विश्व में सबसे बड़ी माया क्या है? उत्तरः- चलायमान होना।

प्रश्नः- दादी, ड्रामा के अन्दर आपको कोई सीन करने के लिए कहा जाये तो आप कौन-सी सीन करना पंसद करेंगी? उत्तरः- जहाँ देखेंगी कोई विघ्न है सूक्ष्म पॉवरफुल मन्सा संकल्प से चेंज करने का। पॉजिटिव में पॉवर है निगेटिव को खत्म करने की।

प्रश्नः- किस साल में विनाश होगा? उत्तरः- यह बाबा बताता नहीं है पर तुम तैयार रहो, विनाश कभी भी हो सकता है।

प्रश्नः- हम यूथ आप जैसी 14 वर्ष तपस्या कर सकते हैं? उत्तरः- क्यों नहीं, एक बाबा दूसरा न कोई, यह पाठ पक्का कर लो। अशरीरी भव का अनुभव ऐसे हो जो कन्टीनिव फोर्स वाला पुरुषार्थ चलता रहे। पुरुषार्थ में आलस्य-अलबेलापन न रहे। दृष्टि-वृत्ति की एक्टीविटी को एक्यूरेट करना माना पक्का बन जाना - यही तो भट्ठी करना है। जैसे भट्ठी में वो इटें पक्की हो जाती हैं तभी उसे दीवारों में यूज़ करते हैं। भट्ठी में कोई कच्ची ईट रह जाती है तो फेंक देते हैं। तो अभी ऐसी भट्ठी करो जो पक्के रहो, अभी तो ऐसी भट्ठी हर एक कर सकता है। कभी न कभी कोई ने ऐसा अच्छा पुरुषार्थ किया है जो फल-स्वरूप आज स्व सहित सर्व के काम में आ रहा है।

प्रश्नः- बाबा को आप बहुत अच्छी लगती हो, तो बाबा के साथ आपका अपना व्यक्तिगत सम्बन्ध है और उसमें आप बाबा के साथ कैसे मजे से बातचीत करती हो, तो हमें बहुत अच्छा लगता है, जब आप हमें ऐसा दृश्य दिखाते हो, अपना अनुभव शेयर करते हो, इससे आप हमें यह सिखाते हो कि हम बाबा को प्यार कैसे करें? तो अभी मैं यह जानना चाहती हूँ कि बाबा से आप अभी-अभी मतलब इन दिनों कैसी बातें कर रही हो? बाबा से किस तरह से चिटचैट करती रहती हो?

उत्तरः- जब कम्पैनियन दोनों मैच्युअर होते हैं ना, तो बात कम करते हैं पर दोनों के मंगल मिलन से हर एक को लाइट माइट का अनुभव होता है, तो यह एक शक्ति है आज्ञाकारी बनने की। जो बहुतकाल से आज्ञाकारी ओबिडियेंट हैं, वफादार हैं माना सिवाए बाबा के और कोई याद आता ही नहीं है। ईमानदारी यानि थोड़ा भी निष्फल नहीं हुए हैं। क्या करें... मजबूरी जब भी आती है माना बाबा से सम्बन्ध नहीं है। बाबा के हर बोल के लिए कदर है, उसी प्रमाण अपनी जीवन यात्रा सफल की है। तन-मन-धन मेरा नहीं है, थोड़ा भी जो मेरा कहाँ भी है, तो अन्दर वो खींचता है। सम्बन्ध में मेरापन है, तन में मेरापन है, कहीं पर भी मेरापन है तो उसको समर्पण कैसे कहेंगे? कुछ मेरा नहीं माना समर्पण। तो बाबा ऐसे बच्चे को छत्रछाया के नीचे ऐसे रखता है जैसे गोदी में लेके गले का हार बनाया, अभी सेवा में छत्रछाया है। कोई और संकल्प कुछ है ही नहीं।

30-6-15

"हमारी शक्ल सोचने वाली न हो, कोई भी प्रॉब्लम आये उसे पुराना नहीं करो, उसी समय उसका हल लेकर ठीक कर दो" (गुल्जार दादी)

जब हमारी अवस्था ठीक होती है तो सब अच्छा लगता है। जब अवस्था थोड़ी भी नीचे ऊपर होती है तो अच्छा भी बुरा लगता है। उस समय मन समझ नहीं सकता है कि यह अच्छा है या बुरा है? उस समय समझ भी कम हो जाती है क्योंकि हमने छोटेपन से सब प्रकार के अनुभव देखे हैं, छोटों का भी, बीच वालों का भी, अभी फिर वही बड़े हुए तो उन्हें

निमित्त बड़ा कहते हैं, उनको भी देखा है। तो अनुभव तो भिन्न-भिन्न है। कोई हैं जो बहुत साधारण चलते हैं ऐसा भी अनुभव है। तो सभी खुश हैं? हमको तो यही रहता है कि ऐसे ना हो कि यहाँ रहते भी खुश नहीं हों। खुशी जरुर होनी चाहिए। खुशी के बिना यहाँ रहना ठीक नहीं है। उसके लिए क्या करना चाहिए? जिस किसी में फेथ हो तो उसकी राय ले सकते हैं।

लेकिन शक्ल पर खुशी जरुर होनी चाहिए। शक्ल सोचने वाली न हो, ऐसे नहीं जहाँ बैठें वहाँ सोच में चले जायें, ऐसा नहीं। खुशी नहीं जाये। बात, बात से भले करें लेकिन खुशी नहीं जाये। खुशी छोड़के और फिर सोचते हैं तो रिजल्ट क्या हुई? खुशी तो चाहिए ना, सब इस बात में तो ठीक है ना! तो जिस बात में खुशी कभी गुम होती है उसका पुरुषार्थ करो क्योंकि हरेक का स्वभाव, हरेक का वर्क अपना-अपना है। उसके अनुसार जैसा डायरेक्शन मिले, वैसा करना चाहिए। इसमें कभी कभी पूछना भी पड़ता है। बाकी हैं ठीक, जनरल क्या कहेंगे, ठीक है! ठीक हैं! ठीक होना ही चाहिए, बाबा ने इतने बड़े भवन बनाके दिये हैं, ऐसे तो हमने देखा फॉरेन में जो रहते हैं, दिलपसंद वाले उनके रहने का तो देखना ही मुश्किल होता है। उनको देख करके और ही तरस आता है, जब बन्धन में आ जाते हैं, उस समय उनकी शक्ल देखनी चाहिए। तो सभी खुश हैं? हमारी खुशी कभी नहीं जाये बस क्योंकि हम भगवान के बच्चे हैं डायरेक्ट। कोई प्रॉब्लम हो तो उसे पुराना नहीं करो, कभी मिलेगा टाइम तो बता देंगे, नहीं, क्योकि इसमें भी इतना टाइम जो गंवाया वो कहाँ गया? वो तो खुशी कम हुई ना। हम तो देखते हैं बाबा ने हमारे लिए क्या नहीं सोचके किया है, हर छोटी बात को सोच करके यह रहने का स्थान बनाया है।

शुरू से ही हमने देखा है कि बाबा के अन्दर यही रहता कि बच्चों को कोई दु:ख नहीं मिले, तो अभी भी यह जिम्मेवारी बड़ों की है और बताने वालों के ऊपर भी है, सहन करना समझे बहुत जरुरी है और सहन नहीं होता, अन्दर संकल्प भी चलता है। दुविधा में रहते हैं कि करें, नहीं करें..., तो वो लाइफ नहीं है। लाइफ माना खुशी। कोई सिर पर बोझ नहीं। कोई न कोई बीच बीच में बोझ आता है, ऐसे नहीं। लेकिन उनको सोच सोच के बड़ा नहीं बनाओ। परन्तु कोई की नेचर कैसी होती है, कोई की कैसी... मानो आपमें सहनशीलता की टोटली नेचर कम है और मैं आपको वो प्रोग्राम देती हूँ, जो सहन करना ही है तो कैसे चलेगा! पहले समझना चाहिए जिसको देते हैं उनकी नेचर, उनके आस-पास रहने वाले साथी, यह सब पहचान करके पीछे वो काम देवें, तो सब ठीक है! अच्छा है। तो यहाँ बाबा ने रखा है, यह कोई कम भाग्य नहीं है। किसी भी कारण से आप आ गये हैं लेकिन यह भाग्य तो बना ना।

पहली बात तो है खुश रहते हो कि यहाँ रहते भी कई प्लान बनते हैं, यह करें, यह करें... यह अपनी सम्भाल जरुर करो। अगर मानो ऐसा होता भी है तो स्पष्ट किसी को सुनाना चाहिए। बीच में ऐसे फेथफुल कोई हों तो उससे मिलके, राय करके उसका सहयोग ले सकते हैं, अच्छा है तो। ऐसे नहीं संग ऐसा लेवें जो और ही उसको डुबो देवे। तो ठीक हैं सभी, हाँ तो जरुर करेंगे और हाँ करना भी चाहिए! जब बाबा के घर में रहते हैं, परिचय देते हो, तो कहाँ के हो बाबा के घर में रहने वाले हैं। कम थोड़ेही हैं, यह भाग्य मिलना भी कम नहीं है। हम लोग तो छोटेपन में ही आ गये, लेकिन हमने देखा है जो पीछे पीछे बने हैं एक्जाम्पुल तो हैं ना, तो सोच समझके करना चाहिए। अपने लाइफ के मालिक होके सोचो, ऐसे नहीं इसने कहा ना, इसका देखा है ना, बस इसमें फर्क हो जाता है। अच्छा।

अभी के समय अनुसार मैं समझती हूँ, बाबा की रोज़ की मुरली ही हमारे लिये डायरेक्शन है, वरदान है। तो जो बाबा के इशारे होते हैं वो मुरली में ही होते हैं, अगर मुरली को आप पढ़ो उस ध्यान से, तो इसमें आज बाबा ने क्या कहा, अगर कोई कमी है तो वो अटेन्शन जरुर देना है और कोई को भी निमित्त बनाने के बजाए बाबा ही निमित्त अच्छा है लेकिन सिर्फ अटेन्शन देना। अच्छा। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"सेवा में सफलता का आधार - अनुभव"

हमारे अनुभवों के आधार पर सफलता का आधार है। पहली बात हम खुद से पूछें कि मेरा बाबा पर और सारी नॉलेज पर पूरा-पूरा पक्का निश्चय है? निश्चय बुद्धि विजय। अगर बाबा में पूरा निश्चय है तो बाप हमें जो नॉलेज नई-नई दे रहा है, जिसे कभी कहाँ सुना नहीं। जो आत्मा के 84 जन्मों की नॉलेज है, या परमात्मा बिन्दू ज्योति है, सर्वव्यापी नहीं है, यह नॉलेज है। चाहे ड्रामा 5000 वर्ष है, यह कल्प-कल्प फिरता है, चाहे हमारी धारणायें जो हैं वह बिल्कुल नई हैं। तो पूछना है खुद से कि हर प्वाँइन्ट में हर प्रकार से बाप और नॉलेज पर मेरा फेथ है? या उसी निश्चय में कभी-कभी कोई-न-कोई संकल्प, जिसको संशय कहो वह उठता है? या मुझे बाबा पर 100 परसेन्ट निश्चय है और उसी निश्चय से हर कदम में विजयी हैं क्योंकि सबसे पहले निश्चय है कि बाबा सत्य है, सत्य बाबा जो सुनाता है, वह सब सत्य है, राइट है। तो अगर बाप में हमारा निश्चय है, तो हर सेकेण्ड, हर कदम में जो श्रीमत है, उसी श्रीमत पर चलते हैं? फल स्वरूप हर कदम के पीछे सफलता का अनुभव होता है? कदम-कदम में कमाई है। तो श्रीमत पर बरोबर ऐसा अनुभव रहता कि हर कदम आगे बढ़ते सहज ही विजयी बनते जा रहे हैं। तो यह भी हुई सफलता। तो सफलता का आधार, हमारा हर कदम श्रीमत पर हो। तो श्रीमत अनुभव कराती है कि हमारे हर कदम के पीछे पदम समाया हुआ है इसलिए बाबा के इशारे अनुसार कदम-कदम पर सौभाग्यशाली अथवा पदमापदम भाग्यशाली हैं। हम श्रीमत में अपनी हद की मनमत न मिलावें, सदा श्रीमत को बुद्धि में धारण करें, तो सामने बाबा रहेगा।

तीसरा सफलता का आधार है – त्याग। एक का त्याग करेंगे तो 100 गुण उनका रिटर्न मिलेगा। तो त्याग के लिये बाबा का पहला-पहला डायरेक्शन है – कि देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों को त्याग अर्थात् भूल मामेकम् याद रखो। तो त्याग में देह-अभिमान भी आता, त्याग में हमारे जो भी सब सम्बन्ध हैं, कोई भी प्रकार के वो भी त्याग में आते, तो चाहे किसी भी प्रकार की हमारे में इच्छा है, वे इच्छायें भी त्याग हो जायें। तो जहाँ इच्छायें सब त्याग हो जाती वहाँ सफलता जरूर होती है। त्याग माना इच्छा मात्रम् अविद्या। इच्छा का अर्थ ही है अज्ञान। इच्छायें 100 प्रकार की हैं, उन सब इच्छाओं का त्याग चाहिए। यह भी इच्छा है कि मेरे सेन्टर की सेवा बहुत अच्छी हो तो हम सबको बतायें वाह मेरा सेन्टर... यह भी इच्छा है। अपनी सेवाओं के लिए बहुत इच्छा करते और वही इच्छा रखकर सेवा करते। आप कहेंगे यह इच्छा थोड़ेही है, यह तो उमंग होता। लेकिन उमंग अलग चीज़ है, इच्छा अलग चीज़ है। यह बहुत सूक्ष्म है इसलिए मिक्स हो जाता है। इच्छा में अहम् पैदा होता। इच्छा में देह-अभिमान बहुत आता, मैं और मेरा। तो यह जो बाबा कहते यह सेवायें तुम्हारी नहीं हैं, यह तो बाबा करन-करावनहार कराता, वह भूल जाता। मैंने आज बहुत अच्छा भाषण किया, सबको बहुत अच्छा लगा, यह भी इच्छा है। यह भी जो सूक्ष्म आता कि हम इनसे भी आगे जाके दिखाऊं, इसमें भी आगे जाऊंगी, यह करूँगी, यह करूँगी, यह है गी, गी, गी... देह-अभिमान। जैसे बाबा कहते तुम भाषण करने बैठे तो बाबा को याद करो, बाबा आपेही मेरे से बुलवायेगा। परन्तु मैं आज यह करूँगी, ऐसा ऐसा जो "मैं" "मैं" आती, वह है इच्छा। परन्तु बाबा याद किया, बाबा मेरे साथ है, साथी क्यों, मैं निमित्त हूँ, निमित्त हूँ...। तो निमित्त समझकर चलना यही सफलता का आधार है।

अगर इच्छा नहीं होगी तो सदैव अनुभव होगा कि बाबा की मेरे सिर पर बहुत ब्लैसिंग हैं। तो कोई इसमें बाबा की ब्लैसिंग समझकर चलते, कोई बाबा की ब्लैसिंग को नहीं मानते। परन्तु अगर लाइन क्लीयर है तो बाबा की एक के बदले 100 गुणा ब्लैसिंग मिलती। बाबा को हम मानते हैं, वह हमारा वरदाता है, वरदानों से हमें आगे उड़ाता है। तो हम वरदानी हैं, ऐसा खुद में निश्चय हो जाये। इच्छा वाले को रहता कि मेरा शो हो, इसने बहुत अच्छा किया, यह किया, वह किया... यह है इच्छा। परन्तु कहा जाता तुम निमित्त हो, इसलिए निष्कामी बन सेवा करो। तो बाबा तुम्हें विशेष सफलता देगा। इच्छा वाला कभी ना उम्मींद हो जायेगा और कभी कोई सफलता मिली तो उम्मींद में आयेगा। तो उसका बैलेंस नहीं रहता। परन्तु बाबा का वरदान है "हे उम्मीदों के सितारे!" हे पदमापदम भाग्यशाली! सौभाग्यशाली बच्चे!.. यह सब हमारे लिए वरदान हैं। अच्छा। ओम् शान्ति